कविता चौधरी

राजस्थान

सागर का निर्माण

गिरती हैं बूँद बादल से,
चोट खाकर धरती पर,
कहीं मुश्किलों से मिलती हैं,
सागर से।

भले ही गिरती हो
भिन्न–भिन्न प्रकार से,
पर सागर में वह एक हो जाती हैं,
जल के नाम से।

एक बूँद ना पहुँच पाएगी
सागर तक,
एक बूँद से न होकर
एक सागर बनता है
मिलकर बूँद–बूँद से।

नाली से होकर आई हो,
या सुंदर सड़क से,
पर वो बूँद सागर में दिखती है,
समान रूप से।

ना छोटी बूँद ना बड़ी बूँद,
बूँद–बूँद मिलकर बन जाती है,
जल के नाम से।

भले ही गिरी हो
भिन्न–भिन्न प्रकार से,
परंतु बूँद–बूँद चलती है,
एक दूसरे के साथ से,
तभी मिल पाएगी सागर से।

भिन्न–भिन्न बूँद को मिलना होगा,
एक बूँद अलग होकर,
ना पहुँच पाएगी सागर तक,
एक बूँद से न होकर,
एक सागर बनता है
मिलकर बूँद–बूँद से।